अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और जो जीवित है रूपान्तर हो जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:52) यह तब होगी जब कलीसिया बादलों पर उठा लिया जाता है और मसीह के सा□ मिलेगी। हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, मसीह प्रभु का महिमामय देह का सादृश्य में रूपांतरण होगा । (फिलिप्पियों 3: 21) कलीसिया, प्रभु यीशु मसीह के इस आगमन की बाट जोह रहे हैं ।(फिलिप्पियों 3:20; कुलूसियों 1: 7) तत्पश्चात प्रभु विश्वासियों को उनके काम के अनुसार प्रतिफल देंगे और इस दिन को प्रभु का दिन (मसीह के दिन) भी कहा गया है । (फिलिप्पियों 2:16; तीमु□युस 4: 8)

इस घटना के बाद प्रभु अपनी कलीसिया के सा□ इस धरती में वापस आएगी ताकि वह अपनी जनता, इस्राएलियों के सम्बंद में अपने वायदे को निफाये। इस आगमन को मनुष्य के पुत्र का आगमन कहा गया है। (मत्ती 24: 30) इस दौरान यह संसार मसीह-विरोधी का शासन के अधीन बड़े क्लेश से होकर गुजरेगा। यह घटना को यीशु मसीह की 'महिमा का प्रगट' कहते है ।

इसके परिणामस्वरूप मसीह उनके विरोधी को उसके सिंहासन से हटा देगा और इस्राएलियों को उनके राज्य में वापस लौटाएगा और दुनिया का हकूमत स्वयं ले लेगा। भविष्यद्वक्ताओं के बताये अनुसार, मसीह, इस दुनिया में यरूसलेम को राजधानी बनाकर हजार वर्ष का शासन रहेगा। इसे हम मसीह का हज़ार साल का शासन काल कहते है। इन दिनों के बाद अंतिम न्याय होगा। सारे मृतक जी उठेंगे; जितने मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किये हो वे सब शाश्वत (अनन्त) दंड के भागी होंगे।

प्यारे मित्र, आप अपना अनंत काल कहां बिताएंगे? यदि आप इस संसार में जीते जी, आप अपना पाप का क्षमा के लिए यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता एवं प्रभु मानकर स्वीकार करोगे तो आप इस भयानक दण्ड से बच पाएंगे और मसीह के सा□ हमेशा के लिए जीने पाएंगे।
क्योंकि उचित वक़्त यही है। .....। देखो, अभी उद्धार का दिन है। (2 कुरिन्थियों 6: 2)। और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। (इब्रानियों 9: 27) ।

हमारा आपसे यह अनुरोध है की अनुग्रह का दरवाजा बन्द किये जाने से पहले आप इस उद्धार, जो परमेश्वर का दान है अपनाये।

उद्धार एवं मसीही जीवन

के. जी कुरियन , कोट्टायम

उद्धार एवं मसीही जीवन I

हर एक मनुष्य अपने प्राण की मोक्ष (उद्धार) की कामना करते है I लेकिन □ह कैसे हासिल हो सकते है I मोक्ष प्राप्ति □ा परलोक जाने के विष□ आज का एक बहुत बड़ा सवाल है I उद्धार □ा मोक्ष कहां से □ा किस से प्राप्त है?

उद्धार हासिल करने में क्या रुकावट है ? सारे धर्मो के सिखावे के अनुसार एवं हमारे व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर भी हम □ह कह पाएंगे की उद्धार □ा मोक्ष पाप की छुटकारा से ही मुमकिन है I

इंसान के जीवन में अशांति एवं असंतुष्टी का मूल कारण पाप ही है I पापि□ों के उद्धारकर्ता के रूप में केवल □ीशु मसीह ही प्रगट हुए है I वह जगत का उद्धारकर्ता इसलिए है क्योंकि वह मनुष्य को उसके पाप से बचाता है I □ीशु मसीह का एक विख्यात शिष्य, पौलुस लिखता है - □ीशु मसीह पापि□ों का उद्धार के लिए इस जगत में आ□ा I (1 थीमुथि□ुस 1:15) I आई□ हम □ीशु मसीह द्वारा प्रदान उद्धार को गौर से परखे और एक कामि□ाब मसीही जीवन के बारे में समझे , और हमारी इस प्र□ान के लिए पवित्र शास्त्र बाइबल को आधार बना□ I

मनुष्य पापी है, □हाँ तक की वह जन्म से ही पापी है और वह इसलिए क्योंकि पहला मनुष्य पाप कि□ा I बाइबल कहती है - एक व्यक्ति से पाप और पाप से मृत्यु जगत में फ़ैल ग□ी I (रोमि□ो 5:12) I

सारे इंसान पहला मनुष्य आदम का संतान है I अतः हर एक जो उससे उत्पन्न होता है आदम का पापम□ गुण के साथ उत्पन्न होता है I

हम हमारे पापम□ कर्म के कारण पापी नहीं बने है प्रत्युत हमारी जन्म ही पापम□ प्रकृति में हुई है I हम में पाप की मूल प्रकृति (गुण) जन्म से मौजूद होने के कारण हम पाप के फल (कर्म) प्रगट करते है I

पाप क्या है?

सर्वप्रथम यह समझना है की पाप क्या है ? परमेश्वर का आज्ञा नहीं मानना एवं उससे शत्रुता रखना ही पाप है I यह परमेश्वर के आज्ञा का उल्लंघन कर उनके

महंगी वेशभूषा, सांसारिक धन दौलत इत्यादि 'संसार' पद से तात्पर्य है । (1 यूहन्ना 2 : 16) ।

शरीर

यह हमारे पापमय जीवन का स्वभाव का चित्र है जो हमारे पुराने मनुष्यत्व है । उद्धार के साथ हम नई सृष्टि जरूर बन जाता है परंतु हम इसी शरीर में वास करते है जो पुराने मनुष्यत्व का है। । यदि हम पवित्र आत्मा के नियंत्रण से बाहर हो जाता है तब इस शरीर का पुराने मनुष्यत्व का स्वभाव के काबू में आ जाता है ।

शैतान

जिस प्रकार शैतान परमेश्वर का शत्रु है उसी प्रकार वह परमेश्वर के जन से भी शत्रुता रखते है । (1 पतरस 5:8)। परमेश्वर के संतानो को गुमराह करने का उद्देश्य से वह ज्योतिमर्य स्वर्गदूत का रूप भी धारण करता है (2 कुरिन्थियों 11: 14) । हमे दृढ़ हो कर, उसका साम्हना करना है (1 पतरस 5: 9) । परमेश्वर का आज्ञा है की हम विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहें ताकि दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सके।(इफिसियों 6: 16) एक विश्वासी होने के नाते हमे परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लेना है ताकि शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सके । (इफिसियों 6: 11)

सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मीकता की झिलम पहिन कर। और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर। और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। (इफिसियों 6: 14-17) ।

भविष्य की आशा

एक विश्वासी आशावान रहता है। उद्धार से पहले वह आशाहीन था। (इफिसियों 2:12) आशा एक बेहतर कल का प्रतीक्षा है । जिस तरह प्रभु यीशु मसीह हमारे उद्धार एवं जीवन का केंद्र हे उसी प्रकार वह हमारी आशा-स्थान भी है (1 तीमुथियुस 1:1)। क्योंकि आने वाले कल का प्रवेशद्वार, इस हम हमारे धन्य आशा पुकारते है (तीतुस 2: 13) हमारी आशा की विषय-वस्तु प्रभु यीशु मसीह का दूसरा आगमन है (यूहन्ना 14: 1-3) मसीह का वायदा है की वह अपने लोगो को अपने संग रखेगा। न केवल वे जो जीवित है बल्कि वे विश्वासीगण भी जो मर मीठे है इनमे समिल्लित होंगे । (1 थिस्सलुनीकियों 4: 13-16)। जब मसीह बादलों पर प्रगट होगा और तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे

तलवार है । .....और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। (इफिसियों 6: 17) ।

परमेश्वर के लिखित वचन के माध्यम से उनके इच्छा को समझते है। कलीसिया की सिद्धांतों एवं व्यवस्था क्रम कोई इतिहास या परंपराओं पर आधारित नहीं है किंतु सिर्फ लिखित वचन ही एकमात्र प्रमाण है । पवित्र आत्मा की प्रेरणा से हम वचन के सचाईयों को समझते है। हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए । (2 तीमुथियुस 3: 16, 17)
न केवल हमे वचन पढ़ना है परंतु उसे मनन भी करना है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। (भजन संहिता 1: 3) । मनन करना जुगाली करने की तरह है ।

समर्पण: एक मसीही अपने आप को और अपना सब कुछ परमेश्वर के महिमा के लिए समर्पित करना है । रोमियों 12:1) इसमें आत्मा, तन, मन और धन सब शामिल है । हमारे देह परमेश्वर का मन्दिर है। इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करना है । हम हमारी जीवन से जुड़ी कोई भी वस्तु के मालिक नहीं है परंतु परमेश्वर के भण्डारी (खिदमतगार) और केवल रखवाले है । हम अपने धन प्रभु का सेवकाई और परमेश्वर के जन के ज़रूरतो को पूरा करने में प्रयोग करना है । मेहमानदारी (पहुनाई) हमारा कर्तव्य है ।(रोमियों 12:13; इब्रानियों 13:1)। हमारे जीवन आदर्शपूर्ण बनना है । अच्छे मिसाल एवं आदर्शपूर्ण जीवन के बगैर अन्य व्यक्ति हमारे बातो का आदर नहीं करेंगे और हम सुसमाचार के लिए रुकावट बनेंगे ।

मसीही जीवन के बैरियां

संसार

हम इस संसार में है लेकिन हम इस संसार के नही है। इसलिये संसार हम से बैर रखता है। (यूहन्ना 15:19) । संसार से यहाँ तात्पर्य उस स्थिति से है जो परमेश्वर के खिलाफ शत्रुता का व्यवहार रखता है और ईश्वर्य योजनाओ से नफरत रखते है (याकूब 4:4) ।
तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। (1 यूहन्ना 2:15)। ... इस संसार के सदृश न बनो; (रोमियो 12: 2)। सांसारिक अभिलाषाएं, लीलाक्रीड़ा,

योजना से दूर हट जाना है I बाइबल कहती है - सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है I (रोमियो 3 : 23)
पाप एक व्यक्ति का धर्म या जाती के आधार पर भिन्न भिन्न नहीं है I पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर के साथ सहभागिता खो दिया और जैसे वह परमेश्वर से दूर हो गया वह उनके नजर में पापी बन गया I इससे यह मतलब नही की हम सब बुरे काम (कर्म) किये है, प्रत्युत हमारे भीतर पाप का गुण मौजूद होने के कारण पापमय कार्य करते हैं I पहला मनुष्य आदम का पाप हमें इस अवस्था में घसीट लाया है I

बाइबल कहती है - पाप की मजदूरी तो मृत्यू है I (रोमियो 6: 23) हमने यह देखा की हमारे पाप में जन्म होने का कारण हमारे कोई कर्म की वजह से नहीं प्रत्युत: आदम का पाप के कारण है I अतः हमारे स्वयं की प्रयत्न से हम अपने को मृत्यु जो पाप की सज़ा है, छुड़ा नहीं सकतेI हम हमारे पाप के वजह से परमेश्वर के साम्हने अपराधी है और इसलिए दंडयोग्य है I हमारे अंतकरण हमेशा पाप की वास्तविकता से सचेत है I दण्ड की भय हमारे मन की शांति को छीन लेता है I इस दुनिया में नफरत, बैरभाव और हिंसा पाप का परिणामस्वरूप है I पाप का इनकार करना व्यर्थ है I

इस दुनिया में तरह तरह के इंसान पाए जाते है - धार्मिक एवं अधार्मिक, भक्त एवं अभक्त, बुद्धिमान एवं निर्बुद्धि, अमीर एवं गरीब - लेकिन सब एक समान परमेश्वर के नज़रिए में पापी है I

पाप का निवारण या हल कैसे?

पाप से उबरने के लिए मनुष्य कई तरीकों की कोशिश कि□ है और अब भी □ह प्र□ास जारी है I पर वह अबतक असफल है I पाप हमारे सोच विचार, बोली एवं कर्म इत्यादि को अपने वश में कर रखा है I कुछ लोग अक्सर □ह दृढ़ निश्च□ करते है की अबसे आगे पाप नहीं करेंगे पर हमेशा पराजित होते है I हमारे भलाई □ा सुकर्म इस पाप को धो नहीं पा□ेगा I

क्या □ह बड़ी समस्या के लिए क्या परमेश्वर के समक्ष कोई हल है? हां, जगत का उद्धारकर्ता □ीशु मसीह ही इस पाप का हल है I मगर अब व्यवस्था के बिना परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है .... अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता जो □ीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों को हासिल होती है (रोमि□ो 3; 21,22) 'मगर अब ' इस वाक्यांश से तात्पर्□ - 'मसीह के सूली पर मृत्यु एवं उसके जी उठने के पश्चात' - मगर इस सम□ से

पूर्व अपने स्व□ की परिश्रम से उद्धार पाने का अवसर परमेश्वर मनुष्य को दि□ा था लेकिन उसमे वह नाकामि□ाब रहे I

परमेश्वर के धार्मिकता, उनके स्वभाव गुण (सामर्थ, पवित्रता, सर्वज्ञान, इत्यादि) के मूल रूप है I परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगो की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होती है जो साथी को अधर्म से दबा□ रखते है (रोमि□ो 1; 18) परमेश्वर का क्रोध भी उसका एक स्वभाव गुण है जो उनके पवित्रता के विरोध में रहने वालो पर है I

उद्धार का मार्ग

यीशु मसीह इस संसार में मनुष्य का पाप न्यायपूर्वक हटाने और उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम और दया को प्रगट करने के लिए आया I जैसे पहले जिक्र किया था , पहला मनुष्य आदम के द्वारा पाप इस संसार में प्रवेश किया I इसी प्रकार सारे मनुष्य के लिए पाप से उद्धार भी एक मनुष्य - यीशु मसीह के द्वारा हासिल है I जिस प्रकार हम हमारे कर्म से पापी नहीं बनता, उसी प्रकार परमेश्वर हमारे अच्छे कर्म के बदौलत पाप, से नहीं □ुड़ाएंगे I क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। (रोमियो 5: 19) आदम का आज्ञा न मानने के कारण हम पापी बन तो गए है फिर भी मसीह के आज्ञा मानने के कारण हम धर्मी ठहराए जाते है ।

उद्धार कैसे हासिल करे

विश्वास के द्वारा एक व्यक्ति उद्धार हासिल करता है। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। (प्रेरितो के काम 16:31) जब हम परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते है तब हमें यह पहचान होता है की हम आदम के पाप के वजह से पापी हुए है और साथ साथ परमेश्वर के वचन या बाइबल से यह भी ज्ञात होता है की हम उद्धार कैसे हासिल करे । परमेश्वर का यह आज्ञा है - उद्धार के लिए प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करे । 1 यूहन्ना 3:23 में हम पड़ते है - उस की आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें। और रोमियो 3:23 में - उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। उद्धार हमारे विश्वास के द्वारा आता है ।

मसीह जीवन में याद रखने वाली चीज़ें ।

गवाही: हम अपनी मुँह से गवाही देना है की मसीह यीशु ही एकमात्र उद्धारकर्ता और प्रभु है । एक बार हम उन्हें कबूल कर विश्वास किया जिसके फलस्वरूप हम बच गए थे (रोमियों 10: 9) लेकिन हमारा प्रभु का यह आज्ञा है की हम दूसरों से भी यह गवाही का बयान करे । (मत्ती 10:32) इस तरह हम औरों को भी मसीह की और अगुवाई कर पाएंगे और अपनी मसीही विश्वास में भी स्थिरता से आगे बढ़ पाएंगे ।

सदकर्म / अच्छे कर्म: उद्धार, हमारे अच्छे कर्मों पर आधारित नहीं है परंतु भले काम उद्धार, पाने का सबूत है । क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया । (इफिसियों २: १०) अन्य धर्म भले कामों के द्वारा उद्धार, प्राप्त करने की शिक्षा देते है । वचन (नया नियम) का हुक्म इसमें है की हम विश्वास के द्वारा उद्धार प्राप्त करें और फिर अच्छे कामों में तत्पर रहें । ... इसलिये कि जिन्हों ने परमेश्वर की प्रतीति की है, वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें: (तीतुस 3: 8)

प्रार्थना : प्रार्थना मसीही जीवन की शक्ति केंद्र है । प्रार्थना रहित जीवन विफल एवं हार की दशा है । शत्रु शैतान का युक्तियों से विजय पाने के लिए प्रार्थना अनिवार्य है ।प्रभु यीशु अपने चेलों से कहा, - "प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो" प्रार्थना से हमें परमेश्वर की इच्छा ज्ञात होता है । प्रार्थना सिर्फ परमेश्वर से कुछ बातें करने में समय बिताना नहीं है परंतु यह वह समाय है जब हम उनके साथ संगति में रहकर शक्ति प्राप्त करते है। प्रार्थना मे नित्य लगे रहो।; निरन्तर प्रार्थना मे लगे रहो। इत्यादि आज्ञाएं हमें वचन से मिलती है ।(रोमियो 12: 13 ; फिलिपियों 4:6; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17)

परमेश्वर का वचन का पढ़ना एवं मनन करना । प्रार्थना मसीही जीवन का श्वसन तंत्र तो परमेश्वर का वचन आत्मिक संतान या शिशु का आहार है । वचन जो निर्मल आत्मिक दूध की नाईं है पीकर बढ़ते जाना है । (1 पतरस 2: 2) वचन केवल आहार या रोटी ही नहीं बल्कि रोशनी भी है । तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है। (भजन संहिता 119:105) । वचन शुद्ध करने में सक्षम है। तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो। (यूहन्ना 15:3) शैतान से युद्ध लड़ने हेतु वचन आत्मा की

परमेश्वर के संतान ही आराधना करते है और वे पिता की आराधना करते है। इसलिए अविश्वासी को आराधना का कोई अधिकार नहीं है । नया नियम में आराधना 'स्थान' से नहीं बल्कि जिनकी आराधना की जाती है उन्हें महत्व दिए गए है ।

नया नियम में प्रभु भोज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लवलीन रहे। (प्रेरितों के काम 2: 42) प्रभु भोज या रोटी तोड़ने का अनुसरण करने से हम प्रभु का स्मरण करते है एवं उनके आज्ञा का पालन करते है। (लूका 22: 19) रोटी उनके शरीर को याद दिलाता है और दाखरस उनका हमारे लिए बहाये गए लहू का स्मरण दिलाने के लिए दिया गया है । यह रोटी और दाखरस प्रभु का शरीर और रक्त में नहीं बदलता है । हम रोटी ही खाते हैं और दाखरस ही पीते है । नया नियम में प्रभु भोज का उपदेश 1 कोरिंथियो 11वीं अध्याय में सुविस्तार बताये गए है। वहां प्रेरित पौलुस लिखता है - जब-जब तुम इस रोटी को खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो जब तक प्रभु न आ जाए उसकी मृत्यु का प्रचार करते हो। (सु. 26) । प्रभु भोज में भाग लेने से पाप मुक्ति नहीं होता है।

विश्वास से पाप मुक्ति पाए हुए इसमें से भाग लेते है। प्रभु यीशु बपतिस्मा और प्रभु भोज, यह दो हुक्म (आज्ञा) पाप से छुटकारा पाए हुआ के लिए स्थापित किया है किंतु आज के ईसाई जगत (या नाम मात्र के मसीही) इसे पाप मुक्ति का एक माध्यम में बदल डाला हे जो हरगिज़ गलत है।

मसीही जीवन एवं सेवाएं

एक सच्चा मसीही जीवन तब होता है जब मसीह उस मसीही में वास करता हो । मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हू। अब मैं जीवित नहीं रहा, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है, (गलातियों 2:20)

प्रभु यीशु मसीह दाखलता है और हर एक विश्वासी उसमे डालियां है । मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो। (यूहन्ना १५। ५) हमारे मसीह के साथ एक जीवित बंधन है । मसीह का जीवरस हम डालियों में प्रवाहमय होता है जिससे हम मसीही सेवायें और फलदायी आत्मिक जीवन व्यतीत कर पाते है । जिस प्रकार दाखलता डालियों के द्वारा फल उत्पन्न करता है उसी प्रकार हम मसीह के साथ बंधन द्वारा आत्मा का फल उत्पन्न करते है । (गलातियों 5:.22,23) . इस प्रकार हम पापमय कामों को छोड़कर भले कामों में सक्रीय हो जाते है।

हम हमारे कर्म से नहीं मगर केवल विश्वास से ही उद्धार हासिल कर सकते है । एक व्यक्ति जब यह विश्वास करता है, की मसीह उसका पाप के कारण मारे गए तब वह मसीह के बलिदानी मृत्यु के द्वारा पाप से छुटकारा प्राप्त करता है । हम शायद यह सवाल उठाएंगे की क्या विश्वास करना भी एक कर्म नहीं है? 'विश्वास करना' से मतलब जिस प्रकार हम हमारी हाथों को बढ़ाकर किसी से एक तौफा स्वीकार करने का सामान है। उद्धार परमेश्वर का दान है । उसे हम केवल हमारे विश्वास रुपी हाथों से स्वीकार करना है । विश्वास उद्धार को उत्पन्न नहीं करता है परंतु उद्धार हासिल करने का एक माध्यम है । क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। (इफिसियों 2: 8,9)

उद्धार परमेश्वर का अनुग्रह से प्राप्त है

परमेश्वर हमें हमारी कोई योग्यता के कारण नहीं बचाता है । दूसरे शब्दों में, हम उद्धार के योग्य नहीं है । पापी होने के नाते हम दण्ड के योग्य है लेकिन परमेश्वर अपने अनुग्रह से ही हमारे लिए उद्धार का मार्ग तैयार किये है । अनुग्रह का परिभाषा - 'अकारण दया' है । परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है (तीतुस 2:11)। तो उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, (तीतुस 3: 5)।

उद्धार मसीह में और केवल मसीह के द्वारा

लोग पूछते है - कौनसी धर्म य□चर्च के द्व□र□उद्ध□र हा□सिल कर सकते है? उद्ध□र न कोई धर्म में है और न कोई धर्म बच□किसी को प□लेग□। परंतु एक मनुष्य है जो बच□सकत□है । एक उद्ध□रकर्त□है वह मसीह यीशु है । उद्ध□र मसीह में और केवल मसीह यीशु में । उद्ध□र मसीह और ईसाई धर्म के द्व□र□ य□मसीह और चर्च के द्व□र□नहीं, केवल म□ मसीह के द्व□र□है । किसी दूसरे के द्व□र□उद्ध□र नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसर□नम□ नहीं दिय□गय□ जिस के द्व□र□हम उद्ध□र प□सकें (प्रेरितों के क□म 4: 12) । मनुष्य क□कोई रीति रिव□ज, उसे प□प की सज□से छुड़□नहीं प□लेग□। ब□प□तिस्म□लेने से य□फिर प्रभु भोज में सम्मिलित होने से प□प की सज□से छुटक□र□नहीं होत□ पुण्य कर्म य□द□न देने से उद्ध□र हा□सिल नहीं होती । पुरोहित य□ स्वर्गदूत उद्ध□र नहीं देते । यीशु मसीह ही केवल एकम□ उद्ध□रकर्त□है । स□रे जगत के लिए वह ही एकम□ उद्ध□रकर्त□है और कोई

नहीं । यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता (यूहन्ना 14:6) ।

उद्धार के घटक

१. पश्चाताप या मन फिराव

पश्चाताप से मतलब केवल खेद प्रगट करना नहीं है परंतु खेद प्रगट करने के साथ-साथ 'मन फिराव' भी होना है।। यह पाप से अलग होकर परमेश्वर की और मोड़ना है । सच्चाई से मन फिराव की जरूरत है और न की धर्म का परिवर्तन या चर्च का बदलना। इसलिये परमेश्वर आज्ञानता के समयों में अनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है (प्रेरितों के काम 17: 30)। उद्धार हासिल करने के लिए परमेश्वर की ओर मन फिराव और मसीह यीशु में विश्वास करना चाहिए (प्रेरितों के काम 20:21) । मन फिराव की प्रक्रिया में पापों को कबूल करना और उससे नफरत करना समाविष्ट है । उदहारण के लिए यहूदा इस्करियोती अपना गुनाह को तो कबूल जरूर किया मगर मन नहीं फिराया परंतु पतरस अपने किये हुए गलती को कबूल करने के साथ साथ मन भी फिराया । दारोगा (जेलर) पौलुस से पुछा - उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं? प्रेरितों के काम 16:30,31 । पौलुस दारोगा से उसके मन फिराव के विषय में कुछ भी नहीं पूछता है क्योंकि उसका सवाल ही मन फिराव के परिणामस्वरूप था ।

२. पाप से आजादी

उद्धार पाने पर सर्वप्रथम हमे पाप से मुक्ति पाने का आनंद महसूस होता है । पवित्र आत्मा हमें सचेत करता है की पापी होने का नाते हम पाप के दंड के योग्य है । लेकिन इस आजादी का मूल यह है की हमारे मसीह पर विश्वास के द्वारा हम उस सजा (दंड) से मुक्त हो चुके है । लूका 7: 48 में हमारे प्रभु यीशु मसीह सामरी स्त्री से कहता है - तुम्हारा पाप क्षमा किया गया है । हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है (इफिसियों 2:8)। जब एक व्यक्ति मसीह में विश्वास करता है तब वह उसके पाप से क्षमा प्राप्त करता है ...जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है। (प्रेरितों के काम 10:43) ।

३. धार्मिकरण (धर्मी ठहराए जाना)

का पालन करने का मुख्या आधार है । मसीह बालको को बपतिस्मा देने के लिए अपने चलो से आज्ञा नहीं दी । नया नियम में बच्चो को बपतिस्मा दिए हुए कोई सबूत नहीं है। पिता, पुत्र एवं पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देने की शिक्षा नया निया में पाते है । बपतिस्मा देने वाले के अयोग्यता के कारण दूसरी बार बपतिस्मा पाने का विषय भी हम वचन में नहीं पाते है ।

2 उद्धार पाया हुआ व्यक्ति अपने आप को पाप से अलग रहे ।

कलीसिया या मंडली बचाये हुओ का समूह है । उद्धार पाने से पहले एक व्यक्ति किसी धर्म या संप्रदाय का हिस्सा होता है , परंतु उद्धार पाने के पश्चात वह परमेस्वर के संतान बन जाता है । यह अनिवार्य है की परमेस्वर का संतान परमेस्वर के जन के संगती में वास करे । अतः अपने पुराने चाल चलन और सहगियो से अलगाना अनिवार्य है । अविश्वासियों से एवं पारंपरिक अनुष्ठानो से खुद को अलग करना है ।

बाइबल इस प्रकार बताती है - इसलिए प्रभु कहता है, "उनमें से निकलो और अलग हो जाओ, और जो कुछ अशुद्ध है उसे न छुओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा; और मैं तुम्हारा पिता होऊंगा और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे।" सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है। (2 कुरिन्थियों 6 : 17,18)
वे अपने आपको झुटे शिक्षकों से एवं उनके शिक्षाओं से अलग रहना है । इसलिए की संसार परमेश्वर के साथ बैर रखता है, उनके संताने भी संसार से अपने आपको अलग रखे।(1 यूहन्ना 2: 15-17; यूहन्ना 15: 18,19; रोमियो 12: 1,2)

3 उद्धार पाया हुआ व्यक्ति परमेश्वर का आराधना करना अनिवार्य है।

परमेश्वर का आराधना करना एक विश्वासी का उत्तरदायित्व है। आराधना का महत्व, परमेश्वर, मसीह यीशु के द्वारा हमारे लिए जिस उद्धार को साकार किया है उस के आधार पर होता है । आराधना में हम परमेश्वर से याचना या प्रार्थना नहीं करते है, प्रत्युत हम उन्हें स्तुतिरूपी बलिदान एवं धन्यवाद चढ़ाते है । (इब्रानियों १३: १५) उद्धार पाने पर हम केवल परमेश्वर का संतान ही नहीं बल्कि हमें राजकीय याजकगण एवं आराधना के लिए योग्य बनाया है । (1 पतरस 2: 4,5,9)
सामरी स्त्री के साथ बातचीत के दौरान (यूहन्ना 4) प्रभु कहता है की आराधना आत्मा और सच्चाई से करना है । 'सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे' (यूहन्ना 4: 23)

प्रभु यीशु का यह आज्ञा है की जो विशवास करता है उसका बपतिस्मा दिया जाए ।

अतः बपतिस्मा देने वाले इस आज्ञा को पूरा करता है तो दूसरी तरफ बपतिस्मा पाने वाले प्रभु का आज्ञा को मानने को तैयार होते है । यह दोनों आवश्यक है ।

पौलुस विशवास करने के पश्चात बपतिस्मा लिया । (प्रेरितों के काम 9 :18) कुरनेलियुस के घर पर विशवास करने वाले बपतिस्मा लिए ।(प्रेरितों के काम 10: 47,48) लुदिया परिवार समेत विशवास किये और बपतिस्मा लिए । (प्रेरितों के काम 16:15) दारोगा और अपने घरवाले सुसमाचार सुनकर उद्धार पाए और तुरन्त उसने और उसके घराने ने बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों के काम 16:33) घराना एवं कुटुम्ब से अर्थ यहाँ उसके परिवार के हर एक सदस्य जो विशवास किया है। 'घर के सब लोगों को प्रभु का वचन सुनाया' ' सारे कुटुम्ब सहित परमेशवर पर विशवास करके .... '(प्रेरितों के काम 9:32,34)

इन वाक्यांशों से यह तात्पर्य है की जितने व्यक्ति बपतिस्मा लिए वे विशवास करने के पश्चात बपतिस्मा लिए और उनमे कोई बच्चे नहीं थे ।

बपतिस्मा का अर्थ एवं महत्व

जब एक व्यक्ति विशवास करके उद्धार पाते है तब वह मसीह यीशु के साथ मृत्यु में भी सहभागी होकर उसके साथ गाड़े जाते हैं और मसीह के साथ जिलाया जाते है । बपतिस्मा इस बात की घोषणा है की एक मसीही (विश्वासी) मसीह यीशु के साथ मृत्यु में सहभागी होकर उसके साथ गाड़े जाना, और मसीह के साथ जिलाया गया है । (रोमियो 6: 3,4)

बपतिस्मा उद्धार का माध्यम नहीं है । यह उद्धार पाने का घोषणा है । बपतिस्मा पाने का सही सही रीति पानी में सम्पूर्णतम डुबाना या निमज्जन करना है । पानी का छिड़कने की क्रिया से बापतिस्मा नहीं दी जा सकती । पानी के छिड़काव से मसीह यीशु का दफनाए जाना एवं जी उठने के सदृश में कैसे चित्रित कर सकते है ? पहले विश्वास करना और फिर बपतिस्मा पाना ही वचन में (नया नियम) में लिखा हुआ पाते है ।

विश्वास के द्वारा बपतिस्मा के सिवाय वयस्क बपतिस्मा के बारे में नया नियम नहीं सिखाता । एक व्यक्ति का आयु नहीं बल्कि उसका विश्वास ही इस आज्ञा

धर्मी ठहराने से एक व्यक्ति धर्मी नहीं होता है ।यह केवल एक घोषणा है की वह पापरहित एवं निर्दोष है । यह दण्ड की आज्ञा से छुटकारा (भुगतान) है । परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उन को धर्मी ठहराने वाला है (रोमियो 7:33) । संक्षिप्त में धार्मिकरण से तात्पर्य हुकुमत के द्वारा दण्ड की आज्ञा को खारीज करना होता है ।

धर्मी किसे ठहराया जाता है? पौलुस रोमियो की पत्री में लिखता है की 'अधर्मियों का' ..... जो भक्तिहीन के धर्मी ठहरने वाले पर विशवास करता है उसका विशवास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है । इस सच्चाई को लूका 17: 10-14 में चुंगी लेनेवाला एवं फरीसी के दृष्टांत के द्वारा प्रभु समझाता है । यहाँ फरीसी अपने आप को धर्मी ठहराने की कोशिश करता है जबकि चुंगी लेनेवाला पाप के बोझ से दबकर अपना छाती पीट पीटकर चिल्लाते हुए कहा – 'हे परमेश्वर मुझ पापी पर रहम कर'और वह परमेश्वर के सन्मुख धर्मी ठहराया जाकर अपने घर गया । धर्मी ठहरया जाना पाप क्षमा से एक कदम बढ़कर है । यह परमेश्वर का वह कार्य है जब एक गुनेहगार को, बेगुनाह मसीह पर विश्वास करने के कारण स्वीकार करता है ।

'धर्मी ठहराया जाना' और 'पाप क्षमा' में □ंतर

पाप-क्षमा, पाप की सजा से छुटकारा है । अन्य शब्द में पाप का कर्म का सजा को खारिज करने से तात्पर्य है । परंतु धर्मी ठहराया जाने से तात्पर्य यह घोषित करना कि वह व्यक्ति पाप रहित है या धर्मी है ।

परमेश्वर केवल मात्र पाप क्षमा ही नहीं □िलाया, परंतु मसीह के द्वारा उस पर विश्वास करने वालों को धर्मी भी ठहराया है । पुराने नियम में सुलैमान का प्रार्थना 1 राजा 8:32 में पढ़ते है - परमेश्वर □ुष्ट को □ुष्ट ठहरा और नि□ोष को नि□ोष कर' लेकिन नए नियम में परमेश्वर भक्तिहीनो को नि□ोष ठहराता है ।

अनुग्रह से धार्मिकता (रोमियो 3:24)

मसीह के लोहू के द्वारा धार्मिकता (रोमियो 5:9) और

विश्वास के द्वारा धार्मिकता (रोमियो 6:28)

धार्मिकता का मूल (स्रोत) परमेश्वर के अनुग्रह से है और यह मसीह के लोहू के द्वारा संभव है । इसे हम हमारे विश्वास के द्वारा हासिल कर सकते है ।

उद्धार की सुनिश्चितता

हर एक इंसान जीते जी पाप से छुटकारा या उद्धार हासिल करना अनिवार्य है । बाइबिल हमें एक छोटी सी उम्मीद भी नहीं देती है की मृत्यु के बाद भी उद्धार हासिल कर सकते हे । यह नामुमकिन है और नाही बाइबिल मृत्यु के पश्चात उद्धार पाए हुओं का कोई जिक्र भी नहीं करती । एक व्यक्ति न केवल जीते जी उद्धार हासिल कर सकता है, बल्कि यह भी वह उस आत्मविश्वास में अपने जीवन बिता सकता है । इसी आत्मविश्वास को ही उद्धार का सुनिश्चितता कहते है । कोई जब अपने उद्धार की सुनिश्चितता पर शक करते है तो कोई आत्मविश्वास से गर्व भी करते है।

प्रभु कहता है, " मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विशवास करता है, अनन्तजीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, पर मृत्यु से पार होकर वह जीवन में प्रवेश कर चुका है। मृत्यु से पार होकर वह जीवन में प्रवेश करना एक स्पष्ट अनुभव है। इससे यह मतलब है की वह व्यक्ति विश्वास करते ही जीवन में प्रवेश करता है और न की वह मरने के बाद वह जीवन में प्रवेश करेगा। यह मृत्यु की अवस्था से जीवन की अवस्था की और एक स्पष्ट परिवर्तन है।

पौलुस लिखता है, तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, इफिसियों 2: 1। यहाँ उद्धार को जी उठने से तुलना की गई है।

यदि एक मृत इंसान जीवन में प्रवेश करता है तो हम निश्चित कह सकता है की वह जीवित है। वह फिर लिखता है, ' क्योंकि विशवास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है' इफिसियों २:८ । ऐसा नहीं की तुम बच जायेंगे या तुम बचाया जा सकता है लेकिन तुम उद्धार प्राप्तः कर चुके हो। यह एक निश्चित बात है जो घटित ही हो चुकी है। यह उस अवस्था का सबूत है जब हम दृढ़ता के साथ कह पाएंगे की हम बचाये गए है।

'पहिले तो तुम अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो।' (इफिसियों 5:8) पौलुस कुरिन्थियों को इस प्रकार लिखता है - और तुम में से कुछ ऐसे ही थे, परन्तु तुम अब प्रभु यीशु मसीह के नाम में और हमारे परमेशवर के आत्मा के द्वारा धोए गए, पवित्र किए गए और धर्मी ठहराए गए। (1 कुरिन्थियों 6 :11) वह उस भूतकाल का ज़िक्र करता है जब वे दुष्टता एवं दुराचार में व्यतीत किए थे परंतु इस वर्तमान जीवन उस बीते हुए जीवन से छुटकारा प्राप्त हुए है । अतः उद्धार या मोक्ष एक सच्चा अनुभव है ।

उद्धार के साथ साथ तुरंत पवित्र आत्मा का वरदान भी दिया जाता है । जो व्यक्ति परमेश्वर के आत्मा के बिना है वह उद्धार नहीं पाया है । 'उसी में तुम पर भी, जब तुमने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है- और जिस पर तुमने विशवास किया-प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।' (इफिसियों 1:13)। यदि किसी में मसीह का आत्मा न हो तो वह उसका नहीं है। (रोमियो 8:9) । उद्धार प्राप्त करने के बाद पवित्र आत्मा के अभिषेक की प्रतीक्षा या इंतिजार में रहने की जरूरत नहीं है । परंतु हमें पवित्र आत्मा में परिपूर्ण होते जाना है । (इफिसियों 5:18)। पवित्र आत्मा में परिपूर्ण रहने वाले उसके अनुसार चलना होगा और वह आत्मा का फल उत्पन्न करेगा । (गलातियों 5:22,23)।

विश्वासी का उत्तरदायित्व

1 उद्धार पाया हुआ बपतिस्मा पाना है ।

बपतिस्मा प्रभु यीशु का एक महत्वपूर्ण आज्ञा है (मत्ती 28: 19, 20) यह पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से अर्थार्थ, त्रिएक परमेश्वर के नाम में दिया जाता है । जब एक व्यक्ति त्रिएक परमेश्वर के नाम में बपतिस्मा पाता है तब वह पिता परमेश्वर का दिव्यत्व को अंगीकार करने के साथ साथ पुत्र प्रभु यीशु मसीह का दिव्यत्व एवं पवित्र आत्मा का दिव्यत्व और व्यक्तित्व को भी कबूल करता है । पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीन अलग अलग व्यक्ति नहीं, परंतु सच्चे एवं एकमात्र परमेश्वर का तीन अलग अलग व्यक्तित्व है । बपतिस्मा प्रभु यीशु का एक महत्वपूर्ण आज्ञा है । पिन्तेकुस्त के पर्व का दिन, नए-नियम की कलीसिया का प्रारंभ में पतरस उद्धार पाए हुए लगभग तीन हजार विश्वासियों से बपतिस्मा पाने को प्रोत्साहित किया ।(प्रेरितों के काम 2:38)

फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा, और विशवास करने वाले सब बपतिस्मा लेने लगे। (प्रेरितों के काम 8 :१२) पुरुष - स्त्री सब बपतिस्मा लेने लगे। लकिन बच्चो का जिक्र नहीं किया गया है। इसका कारण, केवल विशवास करनेवालो को ही बपतिस्मा दिए जाते थे। इथियोपिया देश का खोजा जब विशवास किया तो तुरंत बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों के काम 8 :38) सुसमाचार सुनकर वह विशवास किया और वह इस प्रकार पुछा - "अभी बपतिस्मा लेने में मेरे लिए क्या रफ़कावट है?" । इससे यह व्यक्त है की सुसमाचार सुनते हुए फिलिप्पुस बपतिस्मा का विषय भी उल्लेख किया था ।